25/02/2026

Dr. Arun Kumar Ray
Assistant Professor
Deptt of Psychology
U.R. College Rosera Samastipur

Paper – Clinical Psychology

Semester Vth (MJC) VIII

TOPIC: –

Role of clinical Psychologists in Mental Hospitals: –

मानसिक अस्पताल में नैदानिक मनोवैज्ञानिकों की भूमिका काफी महत्वपूर्ण एवं सराहनीय है। साधारणतः मानसिक अस्पताल दो तरह के होते हैं। एक वह जहाँ मानसिक रोगियों के लिए बिस्तर होते हैं और उन्हें कुछ दिनों तक वहाँ रखकर उपचार किया जाता है। ऐसे रोगियों में रोग का स्वरूप गंभीर होता है। दूसरे तरह के मानसिक अस्पताल वे होते हैं जहाँ मानसिक रोगियों को भर्ती नहीं किया जाता है और न ही उनके लिए कोई बिस्तर आदि ही होता है। ऐसे रोगियों की समस्याओं को कम-से कम समय में समझकर उनका उपचार करने की कोशिश की जाती है। इस तरह के मानसिक अस्पताल को बाह्य रोगी उपचार-गृह भी कहा जाता है। इस तरह के उपचार-गृह या मानसिक अस्पताल में प्रायः वैसे रोगियों का उपचार किया जाता है जिनकी समस्याएँ गंभीर नहीं होती है। मानसिक अस्पताल का स्वरूप चाहे जैसा भी क्यों न हो, नैदानिक मनोवैज्ञानिकों की भूमिका अति महत्वपूर्ण मानी जाती है। क्योंकि ऐसे मनोवैज्ञानिकों द्वारा इन मानसिक अस्पतालों में विशेष मनोवैज्ञानिक कार्यक्रम (Psychological Programme) चलाये जाते हैं जिसके माध्यम से वे रोग के निदान तथा उपचार के लिए विशेष प्रविधियाँ तो विकसित करते ही हैं, साथ-ही-साथ पेशा में आये कुछ नये-नये नैदानिक मनोवैज्ञानिकों को उस काल में प्रशिक्षण भी देते हैं। Garfield & Kurtz 1976, 1982 द्वारा किये गये अध्ययनों से –

P.T.O

25/02/2026

यह स्पष्ट हुआ है कि नैदानिक मनोवैज्ञानिकों का 31.42% औसत समय मानसिक अस्पताल में उनके द्वारा किये जा रहे विभिन्न कामों में बीतता है। मानसिक अस्पताल में नैदानिक मनोवैज्ञानिकों की भूमिका इसलिए महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि उनके द्वारा कई महत्वपूर्ण कार्य किए जाते हैं।

* चिकित्सा (Therapy) – मानसिक अस्पताल में नैदानिक मनोवैज्ञानिकों का सबसे प्रमुख कार्य मनश्चिकित्सा प्रदान करना है। नैदानिक मनोवैज्ञानिकों का सबसे अच्छा विधि मनश्चिकित्सा के जिन प्रविधियों का प्रयोग मानसिक अस्पताल में अधिक करते हैं। उनमें – मनोविश्लेषणात्मक चिकित्सा (Psychoanalytic Therapy), व्यवहार चिकित्सा (Behaviour Therapy), क्लायंट-केंद्रित चिकित्सा (client-centered Therapy), सामूहिक चिकित्सा (Group Therapy) आदि प्रधान हैं।

* शोध (Research) मानसिक अस्पतालों में चिकित्सा करने के अलावा नैदानिक मनोवैज्ञानिकों को तरह-तरह के नैदानिक शोध में भी हाथ बँटाना होता है। उससे भी उनकी भूमिका में निखार आयी है। नैदानिक मनोवैज्ञानिकों द्वारा इन अस्पतालों में कई तरह के शोध कार्य किये जाते हैं।

* प्रशिक्षण (Training) – मानसिक अस्पतालों में मानसिक रोगों के निदान तथा उपचार के लिए विशेष प्रशिक्षण (Training) दी जाती है। इसमें नैदानिक मनोविज्ञान में एम० ए० करने वाले छात्रों को या फिर मनोविज्ञान में एम० ए० कर लेने के बाद विशेष प्रशिक्षण दी जाती है।

* प्रशासनिक भूमिका (Administrative Role): – नैदानिक मनोवैज्ञानिकों को मानसिक अस्पताल में कुछ प्रशासनिक भूमिकाएँ भी करनी होती हैं। नैदानिक मनोवैज्ञानिकों को मानसिक अस्पताल एवं उपचार गृह (clinic) में कई तरह प्रशासनिक पद होते हैं इत्यादि

Dr. Arun Kumar Ray